© 2016 IJSRST | Volume 2 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

मत्स्येन्द्रनाथ : ऐतिहासिक अनुशीलन

डॉ0 दानपाल सिंह
0177A काजीपुरखुर्द,
गोरखपुर, उ0प्र0।

नाथ–सम्प्रदाय के प्रवर्तक आदिनाथ श्री शिव है। उनके पश्चात् उनसे प्राप्त नाथ तत्त्व ज्ञान, दर्शन एवं साधना का भूतल पर प्रचार–प्रसार महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ आदि नवनाथों ने किया। 55 सम्प्रदाय के विश्वास के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ जी शिव के ही अवतार थे। 'योगिसम्प्रदायाविस्कृति' ग्रन्थ में नवनाथों के रूप में नवनारायणों के अवतार की कथा मिलती है।[1] तद्नुसार मत्स्येन्द्रनाथ कविनारायण के अवतार है। सुधाकर चन्द्रिका[2] नामक ग्रन्थ में दी हुयी सूची के अनुसार नवनाथो का क्रम इस प्रकार है– (1) एकनाथ, (2) आदिनाथ, (3) मत्स्येन्द्रनाथ, (4) उदयनाथ, (5) दण्डनाथ, (6) सत्यनाथ, (7) सन्तोषनाथ, (8) कूर्मनाथ, (9) जालंधरनाथ। नेपाल दरबार लाइब्रेरी में 'नित्याह्निकतिलकम्' नाम की पुस्तक में कुल 25 कौल–सिद्धों के नात जाति, जन्मस्थान, चर्यानाम, गुप्तनाम और कीर्तिनाम आदि का उल्लेख मिलता है। यह इनका आध्यात्मिक और भौतिक परिचय है। तद्नुसार मत्स्येन्द्रनाथ का नाम–विष्णुशर्मा, जाति–ब्राह्मण, जन्मभूमि–वारणा (बंगभूमि), चर्यानाम–गौडीशदेव, पूजानाम–श्रीपिप्लीशदेव, गुप्तनाम–श्रीभैरवानन्दनाथ और कीर्तिनाम–3 थे। (1) वीरानन्दनाथ, (2) इन्द्रानन्ददेव, (3) मत्स्येन्द्रनाथ। मत्स्येन्द्रनाथ जी का शक्ति नाम उक्त पुस्तक के अनुसार श्री ललिताभैरवी अम्बा पापू था।[3] पुराणसंहिता तन्त्र–शास्त्र और नाथ सम्प्रदाय के ग्रन्थों में इनके मच्छन्दनाथ, मछन्दरनाथ, मच्छेन्द्रपाद, मत्स्येन्द्रपाद, मीनपाद, मत्स्येन्द्रनाथ, मच्छघ्नपाद, मत्स्यान्त्रादपाद आदि अनेक नाम मिलते है। इनमें से कुछ नाम तो मत्स्येन्द्रनाथ के अपभ्रंश रूप है किन्तु मच्छन्द, मच्छघ्न, मीन और मत्स्यान्त्राद आदि कुछ नाम इनके इतिहास से जुड़े है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा उनसे भी पूर्व प्रबोधचन्द बागची ने विस्तार से इनके नामो का विवरण अपने ग्रन्थों में दिया है।[4] तद्नुसार कौलज्ञाननिर्णय नामक ग्रन्थ में मच्छघ्नपाद, मच्छेन्द्रपाद, मत्स्येन्द्रपाद और मीनपाद नामक नाम मिलते है। जबकि अकुलवीरतन्त्र नामक एक दूसरे ग्रन्थ में मीनपाद् और मच्छेनदपाद नाम मिलते है। कुलानन्द नामक ग्रन्थ में मत्स्येन्द्र नाम मिलता है जबकि ज्ञानकारिका ग्रन्थ में मच्छिन्दनाथपाद नाम मिलता है मत्स्येन्द्रनाथ जी के मच्छघ्न नाम पर महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री का अनुमान है कि 'मत्स्येन्द्रनाथ मछली मारने वाली कैवर्त जाति में उत्पन्न हुये थे।[5] कौलज्ञाननिणर्य नामक ग्रन्थ में भी मत्स्यघ्न अर्थात् मछली को मारने वाला नाम उपर्युक्त मत का समर्थन कारता है। इसी ग्रन्थ से यह पता चलता है कि मत्स्येन्द्रनाथ यद्यपि जन्मतः ब्राह्मण थे तथापि एक विशेष कारण से उनका मत्सयघ्न नाम पड़ा। प्राप्त कथा के अनुसार कार्तिक ने कुलागमशास्त्र को चुराकर समुद्र में फेंक दिया था जिसे एक मत्स्य (मछली) ने निगल लिया था। बाद में शिव ने मत्स्येन्द्रनाथ का अवतार धारणकर समुद्र में जाकर कुलागमशास्त्र को निगल जाने वाले मत्स्य

का पेट फाड़कर उक्त शास्त्र का उद्धार किया था। इसी घटना के कारण महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ का नाम मत्स्यघ्न पड़ गया था।[6] मत्स्येन्द्रनाथ जी का एक नाम मच्छन्द भी मिलता है। कश्मीरी शैवागम के महान विद्वान अभिनवगुप्तपाद ने मच्छन्द नाम से ही मत्स्येन्द्रनाथ को प्रणाम किया है। इनके विचार से आतान–वितान–वृत्यात्मक भव–जाल को छिन्न करने के कारण महायोगी का मच्छन्द नाम पड़ा।[7] तन्त्रालोक के टीकाकार जयद्रत ने मच्छ शब्द का अभिप्राय चंचल चित्तवृत्तियों से बताया है। मछली की तरह चंचल चित्तवृत्तियों का छेदन के कारण ही महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ का मच्छन्द नाम पड़ा।[8] मत्स्येन्द्रनाथ का एक नाम मीनपाद या मीननाथ भी मिलता है। नाथ सम्प्रदाय के ग्रन्थ हठयोग प्रदीपिका में मीननाथ को मत्स्येन्द्रनाथ से अलग व्यक्ति बताया गया है। किन्तु डा0 बागची ने इस मत का खण्डन करते हुये दोनो को एक ही व्यक्ति माना है यदि साम्प्रदायिक अनुश्रुतियों और सिद्धों की सूची को देखा जाय तो ज्ञात होता है कि मीननाथ मत्स्येन्द्रनाथ के पुत्र थे।[9] एक तिब्बती अनुश्रुति के अनुसार मीननाथ मत्स्येन्द्रनाथ के पिता थे।[10] इससे अलग भी एक मत नेपाल में प्रचलित है जिसके अनुसार मीननाथ मत्स्येन्द्रनाथ के छोटे भाई थे।[11] वर्णरत्नाकर नामक संस्कृत ग्रन्थ में नाथ सिद्धों की एक सूची मिलती है। इस सूची में पहला नाम मीननाथ का है ओर 41 वे सिद्ध का भी नाम मीन है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उपसूची में पहला नाम मीननाथ मत्स्येन्द्रनाथ का ही वाचक है। बाद में सूची के 41 वें सिंद्ध मीन मत्स्येन्द्रनाथ की शिष्य परम्परा में होने के नाते उनके पुत्र मान लिये गये होगे ऐसा अनुमान किया जा सकता है।[12] इससे मीन नाम के दो नाथ सिद्धों का अस्तित्व सिद्ध होता है।

नाथ सम्प्रदाय की परम्परा के अनुसार महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ नाथ सम्प्रदाय के प्रथम मानव आचार्य थे और गुरूगोरक्षनाथ के गुरु थे। मत्स्येन्द्रनाथ जी काशमीरी–कौल सम्प्रदाय के भी प्रवर्तक आचार्य है। नेपाली अनुश्रुति के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ अवलोकितेश्वर के अवतार थे। उपर्युक्त विभिन्न सम्प्रदायों में मत्सयेन्द्रनाथ की उपस्थिति और मान्यता को देखते हुये जहाँ इनकी लोकप्रियता प्रमाणित होती है वही आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार यह भी सिद्ध होता है कि मत्स्येन्द्रनाथ का आविर्भाव मघ्य युग के एक ऐसे युग–सन्धिकाल में हुआ था जिसके कारण अनेक साधन मार्गों के प्रवर्तक के रूप में इन्हें मान लिया गया।[12] किन्तु उपर्युक्त विवरण से मत्स्येन्द्रनाथ के अभिज्ञान और इनके स्थितिकाल आदि का प्रश्न का समुचित उत्तर नहीं मिलता। इसलिए किसी निश्चित निष्कर्ष तक पहुँचने के लिये इस सम्बन्ध में विभिन्न श्रोतों से प्राप्त कथाओं और वर्णनों का समीक्षात्मक निरूपण करना आवश्यक है। स्कन्दपुराण में प्राप्त कथा के अनुसार भृगुवंशीय किसी ब्राह्मण के घर में गंडयोग में एक शिशु का जन्म हुआ। गंडयोग में पैदा शिशु माता और पिता के लिये घातक है इस आशंका के कारण उस शिशु को समुद्र में फेंक दिया गया था। समुद्र में फेंक गये उस शिशु को एक बड़े मत्स्य ने निगल लिया। कालान्तर में किसी समय भगवान शिव उसी समुद्र में स्थित एक द्वीप पर पहुँचकर पार्वती से योग–रहस्य का उद्घाटन किया। उसी द्वीप के पास पानी में रहने के कारण बड़े मछली के पेट में स्थित शिशु ने सारा गूढयोग रहस्य सुन लिया। बाद में जब शिव को इसका ज्ञान हुआ तब उन्होंने उस मछली का पेट फाड़कर शिशु को जिन्दा निकाल लिया। भगवती पार्वती ने उसे मन्दार पर्वत पर लेजाकर उसका पालन–पोषण किया। बड़ा होने पर शिव ने उस शिशु को पृथ्वी पर योगधर्म के प्रचार के लिये नियुक्त किया। मत्स्य अर्थात मीन के पेट में स्थित होने के कारण उक्त शिशु का ही नाम मीननाथ या मत्स्येन्द्रनाथ पड़ा।[13] मत्स्येन्द्रनाथ जी के देश और काल के सन्दर्भ में नेपाली परम्परा में

प्राप्त एक तथ्य का उल्लेख आवश्यक है जिसके अनुसार नेपाल नरेश रनेन्द्रदेव या उनके उत्तराधिकारी के समय में जो सातवी शताब्दी ईस्वी में विद्यमान थे उनके समय में मत्सयेन्द्रनाथ का नेपाल जाना ज्ञात होता है किन्तु बागची ने नेपाली परम्परा से प्राप्त इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया और इसे असिद्ध माना है।[14] इसी सन्दर्भ में मराठी परम्परा से प्राप्त विश्वास का भी उल्लेख आवश्यक है जिसके अनुसार निवृतित्तनाथ को योगज्ञान गहनीनाथ से मिला, गहनीनाथ को यह ज्ञान गोरक्षनाथ से मिला और गोरक्ष ने इसे मत्स्येन्द्रनाथ से प्राप्त किया था। अब क्योंकि ज्ञानदेव के बड़े भाई निवृत्तिनाथ का जन्म समय 1273 ई0 और मृत्युकाल 1297 ई0 ज्ञात है।[15] इसलिए मानना चाहिए कि मत्स्येन्द्रनाथ भी इस काल से कुछ समय पूर्व अर्थात निवृत्तिनाथ से तीन पीढ़ी पूर्व बारहवीं शताब्दी ईस्वी में विद्यमान थे। इस मत का भी प्रबोधचन्द्र बागची महाशय ने विधिवत खण्डन कर दिया।[16] किसी कालिदास के मंगलाष्टक नामक ग्रनथ में मत्स्येन्द्रनाथ जी का उल्लेख आया है।[17] अब यदि मंगलाष्टक के कवि महाकवि कालिदास ही हों तो मानना होगा कि मत्स्येन्द्रनाथ का स्थितिकाल ईस्वी सन् की चौथी शताब्दी अथवा ईसापूर्व प्रथम शताब्दी है क्योंकि महाकवि कालिदास का यही स्थितिकाल माना जाता है। विद्वान बागची ने इस मान्यता का भी खण्डन किया है क्योंकि मंगलाष्टक के कवि कालिदास को महाकवि कालिदास मानना सर्वथा संदिग्ध और अप्रमाणिक है।[18] बंगाली परम्परा के अनुसार जालंधरिपा मत्स्येन्द्रनाथ और गोरक्षनाथ के समकालीन और राजा गोपीचन्द्र के गुरु थे। राजा गोपीचन्द्र के पिता का नाम विमलचन्द्र था और वह मालवा के राजा भर्तुहरि का भाञ्जा था। तिब्बती परम्परा के अनुसार विमलचन्द्र बौद्धद्विान धर्मकीर्ति का समकालीन था जिसका समय सातवीं शताब्दी ईस्वी है। किन्तु तिब्बती परम्परा की प्रामाणिकता पर सर्वथा संदेह करते हुये किसी अन्य पोषक प्रमाण के अभाव में विद्वान बागची ने इस मत को भी स्वीकार करने संकोच किया है।[19] किसी अन्य तिब्बती श्रोत (चक्र–संवर–तंत्र) की आध्यात्मिक गुरुशिष्य परम्परा जो जालंधरीपा से दी गयी है वह इस प्रकार है– जालंधरी–गोहिये–विजयपा–तिलोपा और नरोपा सभी तिब्बती श्रोतों से यह ज्ञात होता है कि उपर्युक्त सूची में उल्लिखित तिलोपा बंगाल के राजा महीपाल (978–1030 ए0डी0) का समकालीन था और इस प्रकार सम्भवतः 10 वीं शताब्दी ई0 के अन्त और 11वीं शताब्दी ई0 के प्रारम्भ में था। यदि इस गुरुशिष्य परम्परा वा विश्वास किया जाय तो जैसा कि विद्वान बागची ने निष्कर्ष निकाला है कि जालंधरी के समकालीन मत्स्येन्द्र और गोरख नवीं शताब्दी के पूर्व नहीं हो सकते।[20] इस प्रकार यदि मत्स्येन्द्रनाथ और लूईपा या लूहीपा को एक माना जाय तो भी विभिन्न श्रोतों से प्राप्त जानकारी के अनुसार दशवीं शताब्दी ई0 मत्स्येन्द्रनाथ का स्थितिकाल ज्ञात होता है।[21] आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कौलज्ञान–निणर्य, बंगलामीननाथ, लेवीनेल–नेपाल, योगीसम्प्रदायाविष्कृत और नाथ चरित्र आदि में प्राप्त तमाम किंवदन्तियों और कथाओं का निष्कर्ष निकालते हुये मत्स्येन्द्रनाथ के सिथतिकाल के सम्बन्ध में कुछ निर्णायक बिन्दु प्रस्तुत किये हैं। तद्नुसार मत्स्येन्द्रनाथ द्वारा लिखित कौलज्ञाननिर्णय नामक जो ग्रन्थ नेपाल से प्राप्त हुआ है उसका लिपिकाल निश्चित रूप से यह सिद्ध कर देता है कि मत्स्येन्द्रनाथ 11वीं शताब्दी के पहले हुये थे।[22] कश्मीरी विद्वान आचार्य अभिनव गुप्त ने अपने तंत्रालोक में मच्छन्द विभु के रूप में मत्स्येन्द्रनाथ को ही मनस्कार किया है यह बात मत्स्येन्द्रनाथ के विभिन्न नामों को उपर्युक्त सूची से सुनिश्चित है क्योंकि अभिनव गुप्तपादाचार्य ने 'ईश्वर–प्रत्यभिज्ञा' की 'वृहतीवृत्ति' सन् 1015 ई0 में और 'क्रमस्तोत्र' की रचना 991 ई0 में की थी। इसलिए उनके द्वारा नमस्कृत मच्छन्दविभू

अर्थात मस्त्येन्द्रनाथ निश्चितरूप से उक्त तिथि से पूर्व ही हुये होगे।[23] 'गंगापुरातत्वांक' पत्रिका में पं0 राहुलसांकृत्यायन ने जिन 84 सिद्वों की सूची प्रकाशित करायी है उनमें एक मीनपा का भी नाम है जो मत्स्येन्द्रनाथ से अभिन्न है। और बुंगाल के राजा देवपाल के काल में हुये थे। क्योंकि राजा देवपाल का काल 809 ई. से 849 ई0 तक ज्ञात है इससे भी यह सिद्ध होता है कि मत्स्येन्द्रनाथ 9 वीं शताब्दी ई0 के मध्य भाग में अथवा इसके अन्त भाग तक विद्यमान थे।[24] मत्स्येन्द्रनाथ से सम्बन्धित उपर्युक्त तमाम कथाओं में एक कथा राजा गोपीचन्द जालन्धरपाल और कृष्णपाल (कानिपा) से सम्बन्धित है। बंगला में 'गोपीचन्द्रेरगान' नामक पोथी में इस बात का वर्णन है कि बंगाल के उपर्युक्त राजा गोपीचन्द्र का किसी दक्षिणी राजा से युद्ध हुआ था। यह छाक्षणात्य राजा इतिहासकारों के अनुसार चोलवंशी राजेन्द्र चोल था। जिसने माणिकचन्द्र के पुत्र गोपीचन्द्र को पराजित किया था। क्योंकि राजेन्द्र चोल का समय 1063 ई0 से 1112 ई0 निशिचत है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि बंगाल का राजा गोविन्दचन्द्र या गोपीचन्द्र इसी अवधि में विद्यमान था। इसलिए राजा गोपीचन्द्र की माता मैनावती के गुरु जालन्धरपाद और उनके समकालीन मत्स्येन्द्रनाथ का समय 11 वीं शताब्दी से पूर्व ही होना चाहिए।

उपर्युक्त तमाम बिन्दुओं पर विचार करते हुये हजारी प्रसाद द्विवेदी ने यह निश्चित किया है कि नाथ मार्ग के आदिप्रवर्तकों –मत्स्येन्द्रनाथ और गोरक्षनाथ आदि का समय नवीं शताब्दी का मध्यभाग ही उचित जान पड़ता है।[25]

संदर्भ सूची

1– द्रष्टव्य – योगिसम्प्रदायाविस्कृति, पृ0सं0–11–14

2– द्रष्टव्य – सुधाकर चन्द्रिका, पृ0सं0–241, नाथसम्प्रदाय ग्रन्थ में पृ0–25 पर उ़द्धत।

3– द्रष्टव्य – नाथसम्प्रदाय, डा0 हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ0सं0–46

4– द्रष्टव्य – नाथसम्प्रदाय, डा0 हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ0सं0–6 एवं आगे।

5– द्रष्टव्य – पी0सी0 बागची द्वारा सम्पादित एवं मायकेल मैगी द्वारा अंग्रेजी में अनूदित कौलज्ञाननिर्णय की भूमिका, पृ0सं0–6

6– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–6

7– द्रष्टव्य – नाथसम्प्रदाय, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेद, पृ0सं0–41 तथा तन्त्रालोक प्रथमभाग–रागारुणं ग्रंथिविलावकीणं यो जालमातान वितान वृति–1/17

8– द्रष्टव्य – तन्त्रालोक के टीकाकार जयद्रथ द्वारा उद्धत एक श्लोक–
मच्छाः पाशाः समाख्याताश्चपलाश्चित्तवृत्तयः।
छेदितास्तु यदा तेन मच्छन्दस्तेन कीर्तितः।। – नाथसम्प्रदाय, पृ0सं0–42 पर उद्धत

9– द्रष्टव्य – योगीसम्प्रदायाविस्कृति ग्रन्थ, पृ0सं0–227 और आगे

10– द्रष्टव्य – बौद्धगानओदोहा, पृ0सं0–4 तथा गंगापुरातत्त्वांक, पृ0सं0–221

11– द्रष्टव्य – नाथसम्प्रदाय, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ0सं0–42

12– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–42

13– द्रष्टव्य – नाथसम्प्रदाय, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ0सं0–40

14– द्रष्टव्य – पी0सी0 बागची द्वारा सम्पादित और माइकेल मैगी द्वारा अग्रेजी में अनूदित कौलज्ञाननिर्णय की भूमिका, पृ0सं0–29

15– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–29–30

16– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–31

17– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–30

18– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–30

19– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–31

20– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–32

21– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–33

22– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–3–4

23– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–31

24– द्रष्टव्य – नाथसम्प्रदाय, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ0सं0–56–57

25– द्रष्टव्य – वही, पृ0सं0–59